ॐ

श्रीरूपभवानी रहस्योपदेश

सारिथ् गटु त्राविथ् ग्वाशस् चायस्
मारिथ् सारि इम् च्यानि पांछ़ इन्द्रय्।
तवय् सहज़कलि यूग् सादिथ्
सर्ववादि जा़निम् ज्ञान-पानस् ह्यहु

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

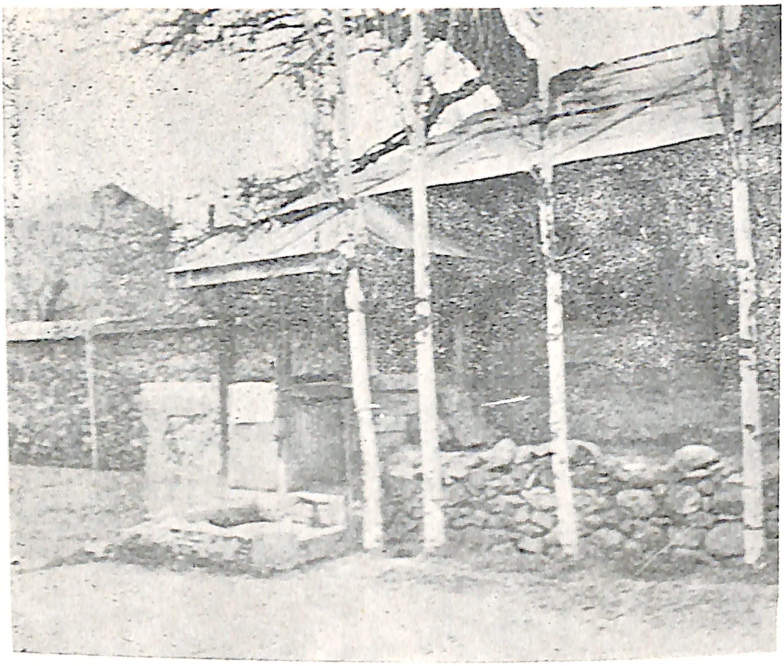

नवाकदल (श्रीनगर) में रूपभवानी का जन्म-स्थल।

वितस्ता तट पर स्थित, श्रीनगर में देवी रूपभवानी का [illegible] मनाये जाने का स्थल। यहीं पर यज्ञशाला है और अलख-साहिबा ट्रस्ट का कार्यालय भी है।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

ॐ

श्रीरूपभवानी - रहस्योपदेशः

संपादक :

डा० शिवानाथ शर्मा शास्त्री

सर्वाधिकार प्रकाशक के
पास सुरक्षित हैं !

जनवरी 1996
मूल्य 20 रुपये

....

प्रकाशक :

1- श्री अलख साहिबा ट्रस्ट, (रजिस्टर्ड)
तिर्थ नगर बोड़ी तालाब तिलू जम्मू

2- श्री अलख साहिबा ट्रस्ट (रजिस्टर्ड)
नवाकदल श्रीनगर 2007

मुद्रक : लियो प्रिन्ट्रस, दिल्ली -92, Tel. : 2209913-14-15, 2417856,
Fax: 2417857

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

वोतशन (मणिगाम) का चमत्कार

देवी रूपभवानी के पात्र में गौ का स्वयं दुग्धदान।

मणिगाम स्थित देवी रूपभवानी का साधना-कक्ष।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

निवेदन

श्री रूप भवानी रहस्योपदेश की यह तीसरी टीका प्रकाशित करते हुए श्री अलख साहिबा ट्रस्ट तीर्थ नगर तालाब तिलू जम्मू को प्रसन्नता और हर्ष हो रहा है। भक्तजनों की श्रृद्धा, भक्ति और इस अमूल्य पुस्तक के लिए बढ़ती हुई मांग को ध्यान में रखते हुए ट्रस्ट ने इस टीका "रहस्योपदेश" का प्रकाशन आप लोगों के समक्ष उस समय लाकर रख दिया है जबकि काशमीरी पंडित बहुत कठिन और दुःखद समय प्लायन का व्यतीत कर रहा है।

प्लायन के पश्चात ट्रस्ट ने तीर्थ नगर तालाब तिलू जम्मू में जमीन का टुकड़ा मन्दिर बनाने हेतु लिया है। श्रृद्धा व निष्ठा से कार्य शुरू हुआ है। आप सब का सहयोग इतने बड़े कार्य को पूरा करने के लिए बहुत जरूरी है। ट्रस्ट के पास बहुत कम साधन है जिससे इतना बड़ा संकल्प संपन्न होगा। इसलिए आप सब से आशा रखते हैं और विनती करते हैं कि आप ट्रस्ट को आर्थिक सहयोग देकर माता अलखेश्वरी रूप भवानी के इस जगत कल्याण मन्दिर को बहुत जल्दी पूरा करने में अपना योगदान ट्रस्ट के A/c No. 6470 में जो Central Bank of India, Talab Tillo, Jammu में है दे सकते हैं। ट्रस्ट आप सब का आभारी रहेगा।

अनुग्रह माता अलखेश्वरी का सहयोग आप सब का और संकल्प हमारा।
तथा असतो

आपका
राज नाथ दर
प्रेजीडेंट अलख साहिबा ट्रस्ट
तीर्थ नगर जम्मू

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

ॐ

श्री पराभट्टारिका महाशक्ति 'तदा तदावतीर्याहं' इत्यादि अपनी शुभ - प्रतिज्ञा के अनुसार जगत - कल्याण के कारण समय २ पर शरणीभूतों के कुलधर्म - जातिधर्म तथा देशधर्म की व्यवस्था को पुनः संस्कार करके तथा और समुद्धार के लिए अवतीर्ण होती है । अनन्तर भौतिक रूप में अपने शारीरिक कार्यक्रम से देश को शिक्षा देती हुई भक्तजनों को अपने रहस्य शस्त्र से उद्धार करती है, यह मर्यादा सनातन काल से श्रद्धेय एंव प्रचलित है।

इसी नीति रीति को प्रत्यक्षावस्था में दिखाने के लिए श्रीजगदम्बा अपने अंशरूप में सन् १६७७ तदनुसार सप्तर्षि संवत् ४६९६ में अपने सद्भक्त श्री पं. माधव ज्यू दर के घर में माधवी - पूर्णा के असामान्य काल में श्रीरूपभवानी नाम से आविर्भूत हुई । अपनी अलौकिक बाललीला और अमान्य धुरन्धर चकित से रहकर शरण आये । आपने अपने पितृकुल एंव श्रद्धालु शिष्यों तथा भक्तजनों को अपनी मातृभाषा में 'रहस्योपदेश' से उद्धार किया। और आगामी काल के लिए इस पथप्रदर्शक उपदेश को छोड कर (आप संवत् ४७९६ तदनुसार विक्रमी सन् १७७७) माघ कृष्ण सप्तमी को अपने कथनानुसार अवस्था के सौ (१००) वर्ष में परमधाम में लीन हुई ।

इस काल में आपने जो २ कार्य देशशिक्षा के व्यवहार में लाये और सिखाये हैं, वह निकट भविष्य में भक्तों को आपके पवित्र 'जीवन चरित्र' द्वारा हिन्दीभाषा में सविस्तार पुरस्कृत करने की भी आशा श्रीअलख् ईश्वरी की कृपा से पूर्ण होगी।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

रहस्योपदेश :--

सह रहस्य-उपदेश आपके निर्वाण काल से लेकर कुछ समय तक गुरुक्रम में व्याख्यान रूप से ही चलता रहा, पुस्तक की आकृति में न था। फिर शक्ति की दुर्बलता के कारण इन उपदेशों ने ग्रन्थ का स्थान लिया, कहीं २ इसकी प्रति शारदा अक्षरों में उपलब्ध थी, विशेष करके फार्सी अक्षरों में इस ग्रन्थ का बहुत प्रचार था, इसी कारण इसमें कहीं २ पाठ भेद भी होता चला आया। कुछ समय पहले इन वाक्यों का मुद्रण भी हुआ था, परं मुद्रक को जैसा आदेश मिला, वैसा छपवा दिया।

दो वर्षो से मैं इस शुभकार्य के अन्वेषण में था, श्री जगदम्बा की इच्छा और आज्ञा से मुझे एक प्राचीनतम आदेश प्राप्त हुआ, फिर और भी तीन प्रतियां एकत्रित करके इनके संमेलन से पं. हरभट्टशस्त्री जी के संशोधित आदर्श की भी सहायता से इस संस्करण को पूरा किया । आशा है, अब मूलग्रन्थ से इस संस्करण में कोई न्यूनता नहीं रही है । और यह देश का कल्याणकारी होगा।

विषय : -

इस सदुपदेश में श्रीअलख् ईश्वरी जी ने अद्वैत शैवमत के अनुसार कर्म उपासना और ज्ञान के सदुपदेश किये है। राजयोग का क्रम एंव समाधि ा का वर्णन भी किया है। बाह्ययोग तथा अन्तःयोग, पूर्णाहन्ता और उसका योग भी दर्शाया है। तात्पर्य है, कि योग्य अधिकारी साधक के लिए कोई भी सिद्धान्त इसमें छिपा हुआ नही हैं।

श्री अलख् ईश्वरी ट्रस्ट के कार्यकर्ता आजतक ऐसे शुभ कार्यो में अपनी पवित्र भावना तथा निष्काम वासना से तत्पर हैं। जिन्होंने आजतक

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

श्रीअलखईश्वरी जी के मन्दिर आदि शुभकार्यों के बताने में अपने कायाकष्ट से धन्यावाद के योग्य निष्काम कार्य किये हैं ।

इसी ट्रस्ट की पूर्ण सहानुभूति से मेरे इस संपादन कार्य में विशेष उत्साह हुआ, अत: मैं इस ट्रस्ट को हार्दिक धन्यवाद देता हुआ इसकी सद्‌भावना को सराहता हूँ ।

यह ट्रस्ट दिये हुए संशोधित पुस्तक के विषय में श्री पं० हरभट्टशास्त्री जी की हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता है, जिन्होंने ट्रस्ट को ५ वर्ष पहले पाठ पुस्तक शुद्ध करके दिया था।

मेरी पूर्ण आशा है - यह मुद्रित संस्करण श्री अलख ईश्वरी जी की पवित्र - वाणी है, अत: श्रद्धालु भक्तजन इसका पाठ करने से जगत् में यश तथा ज्ञान पाकर पारलौकिक श्रेय: प्राप्ति के पात्र बनेंगे। और इस पवित्र - पुस्तक को अपने-२ घरों में पूजा स्थान देकर अपने घर तथा परिवार को व्याधियों से रक्षा करेंगे। क्योंकि इसमें श्री अलख ईश्वरी जी का यही वरदान है।।

ओं शम्। संपादक :

शिवनाथ शर्मा शास्त्री

१५-९-२००७

नरवीरस्थान

श्रीनगर-काश्मीर

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

श्रीरूपभवानी रहस्योपदेशः

अलक्ष्येश्वरी श्री रूपभवानी अपने पिता तथा गुरु श्री माधवजू दर से दीक्षा ले रहीं हैं।

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये।।१।।
अभिप्रेतार्थसिध्यर्थं पूजितो यः सुरैरपि।
सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै गणाधिपतये नमः।।२।।
नमामि सदगुरुं शान्तं प्रत्यक्षं शिवरूपिणम।
शिरसा योगपीठस्थं धर्मकामार्थसिद्धये।।३।।
श्रीगुरुं परमानन्दं वन्दे ह्यानन्दाविग्रहम्।
यस्य सांनिध्यमात्रेण चिदानन्दायते परम्।।४।।
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्ममीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।५।।
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुः साक्षात्महेश्वरः।
गुरुरेव जगत्सर्वं तस्मै श्रीगुरवे नमः।।६।।
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।७।।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

विश्वं दर्पणदृश्यमाननगरीतुल्यं निजान्तर्गतं
पश्यन्नात्मनि मायया बहिरिवोभ्दूतं यथा निद्रया।
यः साक्षात् कुरुते प्रबोधसमये स्वात्मानमेवाद्वयं
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ।।

श्रीगुरवे नमो नमः

सहस्र सर्वत्र व्यापी स्वहृथ् विचार्यम्
बहुबल संबाहु एकतं स्वयंबू परमाकारी।
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परम्र्गती ।।१।।
शुद्द युक्त-मूलादारी क्वण्डली मण्डली गौरी।
स्यद्द अर्थ् सूक्ष्मू सुष्वप्ती चक्र विरक्त शान्तादारी।
ईश्वरी तुर्यातीत परमानन्दी।
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परमगती।।२।।

---

१ 'सुहत्' क. 'सुहृत्' ख. 'संगत्' च. पाठः। २ 'बहुबलू' घ. 'बहुबलूत' ख. 'बहुबाहूक्' क. पाठः। ३ 'एकोतं' ख. पाठः। ४ 'निर्वाणरहस्' क.ग.च. पाठः। ५ 'परमा गती' क. 'परमा गतिः' ख. पाठः। ६ 'शद्धोक्त' ख. 'शद्युक्त' च. पाठः। ७ 'कुण्डलिनी मण्डले' क. ख. ग. घ. पाठः। ८ 'सूक्ष्मौ सुषप्ते' ख. पाठः।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

तद् रूपमयी तत्परमगती स्थानी प्रवाही ।
गति गट् पूरनी च्छदा देह तृपितं
समर्थ् स्वामी परमार्थ् निदानम् ।
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परमगती ।।३।।
उपनिषद् पारिजाता अव्यय् फल् एक्
अर्थी सद्गुर् योगी अदेहो पुरानम् ।
बहु तीज़वानी सुशीतल् सुदर्शन्
निनायु अग्रायु परम् दीफ् प्रसन्नो ।।
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परमगती ।।४।।
पवित्र नेत्र पश्यत मुखी अन्तर्
बाहो बहु-दनाडी असंख्य कामू कर्त् ।
यिहुय् राज्-यूगी दाता पिता सुय

---

१ - 'त्वत्' च 'तत्परमगतिं' क ख. ग. ड., पाठ: । २ 'प्रवाहे घ. पाठ: । ३ 'तृप्तिं' ख. पाठ: । ४ 'सुमर्थं' घ. 'मन' च. पाठ: । ५ 'अक्षय फल एकार्थी' क. एकोऽर्थी' क. ख. घ. पाठ: । ६ 'आदितो' च. पाठ: । ७ 'निर्वायो' च. पाठ: । ८ 'असद्य कामकर्तये' ग. पाठ: ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

सर्व कांख्या सु अर्थ पूरनी
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परम गती ।।५।।
निर्लज्जा रमनू परिरूफ् निदारा
सृष्ट थ्यथ् संहारी प्रलय च्यथ् ।
अदृष्टो अगंन्थे निजानो प्रसन्नो
आदिदीव तथ् निहानो निष्कल थ्यररूफ ।।
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परम गती ।।६।।
लुत्र वित्र न आसा न गुत्री न बाशी
न कुली न कृत्यं महानन्दरूपम् ।
शयुम्-थान् वासी आदि सर्वमध्यं
जिता संन्यासी ब्यन्-बिन्दु-नादी ।।
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परम गती ।।७।।
न जाया न जन्मी दग्दकर्मकाण्डी

---

१ 'अर्थपूरनी' क. ख. ग. पाठः । २ 'पररूप' ग. पाठः । ३ 'प्रसन्दो' क. ख. ग. पाठः । ४ रूपस्' क. ख. घ. च. पाठः । 'रूपम्' ग । ५ 'न' च पुस्तके नास्ति । ६ 'रूफ' घ. । 'रूपस्' क. ख. पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

यथा शान्तबस्मी अरूपा स्वरूपम् ।
सूह सर्व्रत्र-सुखी अदेहो समादि
अमोहसावदानं तथ् निष्कल् निराकार ।।
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परम गती ।।८।।
अहंत्व-ममता गलिथ् थ्यथ् प्रलय ना आसे
यिथु न आसि-मीलिथ् कवलदल् जलबिन्दु ।
मध्य् आकाशी कदाचित् ब्रह्छ् ना आसे
लगि न-त क्या वाचि़ फला रस ग्वनी ।
शिला ज़ल सग् अग्न दाह बस्मो
साद् ताय् पसमु सर्व-अन्तर सृष्टी ।
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परम गती ।।९।।
वेदवाख्-अर्था अमृतनदी संप्रीता
अनेक प्रवाही समनय् षोडशचन्द्र कल् ।

---

१ 'दग्ध कर्म कर्मकाण्डी' क. ख. पाठः । २ 'अह्नन्ता' ग पाठः ३ 'युथा न' च 'यथा' ग. पाठः । ४ 'दलत' क. ख. ग. घ. ङ. 'विन्द' ग. पाठः । ५ 'वृक्ष' क. ख. ग. पाठः । ६ 'वा' च पाठः । ७ 'जलगस्' ग पाठः । ८ 'तापसो' क. पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

स पण्डिता समदर्शगनी अर्चनीदीव्

सु-निर्मल तोत्री सथ् तव् पाठि्।

सर्वत्र जगद्-गुरु सेवा अनन्तपूजनी एक

अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परम गती।।१०।।

निर्वाणदशश्लोकी- स्तवः।

.... ०० ....

ओम् ग्वर अन्तर् तथ् निर्मलम्

शद्धं अत्यन्त् विद्याधरम्।

लल्-नाम लल् परमा ग्वरम्

शिव-माधव नाहं परं ब्रह्म सोहम्।।१।।

---

१ 'संपीता' ग. घ पाठः । २ 'समन्वय्' क. ख. ग पाठः । ३ 'तव-पाठी' घ. 'स्तव पाठी' ग. 'तौ पाठी' च, पाठः । ४ 'वरमं ग्वरम्' ख. पाठः । ५ 'सर्वराग' ग 'रोगान्' ख. पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

कृपा करे सर्व रूगा हरे
ज्ञानी छ़ाल फिरे तान्-तान् व्यसरे ।
समादि-देह समरे सयि अग्नवतूरू
अखंड यज्ञ करे अग्न प्रज्वाले ।
गीता पडे ब्वय् चे़ने कपाल मूचे़
गूपाल जी नाटय करे गूपी-सहाय् ।।२।।
युस हुमसूय् मदुरस् ग्ययि कनि दिये
कन्द् हुहे खंड हुमि पननु दीह ।
श्रीफल् जा़फल् सुफल् ह्यये
मूरिथ शेर नैवेद्यस् ज़य् ।।३।।
समिव त्र्यकारन् कि-न् अकुय् ब्वय्
पान-ति ब्वयि केंह् यिहुय् अकुय् ।
यज्ञस् ब्रह्यो-त बस्म कियवे
अंग न ब्वयि-केंह् आंगन् द्राव् ।।४।।

---

१ 'फिर्यस्' ख, पाठः । २ 'नाट्' क.ख. घ 'नाण्ट्' च. पाठः । ३ युस् ह्योम सूय्' क. ख. पाठः । ४ 'हुमि' क. ख. ग. पाठः । ५ 'साफल् ह्ययि, क. ख. पाठः । ६ 'के' क. ख. ग. पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

पाताल छ़ाल फीरिथ् ता खारूम
म्यचि़-त कन्चऩ मन्ज़ि अनुम् पय्।
अद नद् वुदुम्-त गल-मद प्यवुम्
प्रबातुं साथ् स्वंथु प्रज़ालु-ता ना किंह्।।५।।
हित्रि अनि पाताल गगन गमे
मूरत् ना मूरत् पॉच तत्व्।
चीतन् मले शून्य तिह गले
शन वूनिय् सा छयस सत्।।६।।
आसे ब्वये न-आसे पान्
नासे ग्रास् करे पवन्।
रस् कासे ना किंह् फासे
ना सीर् कॉह् ऑ सीर ब्वय्।।७।।
द्रायस्-त् न्येरवनु आवह्यम् ज़ंगे

---

१ 'ता' क. ख ग घादौ नास्ति । २ 'अनुमस्' ग. पाठः । ३ 'मथुम्' ग. स्वथु प्रज्वलुता' क. ख. ग घ पाठः । ४ 'सूरत् सूरत् ना पंच' क. ख. ग. पाठः । ५ 'सामत्' घ. पाठः । ६ 'ब्वय्' क, ख. पाठः । ७ 'ना आसि' च. पाठः । ८ 'नरकस् कासे' क. ख. पाठः । ९ 'ब्वह्' क. ख. घ पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

चय़् न-त कारुन् मंगे कस् ।
रंगा रंगी गुल् फवलिहग्म अंगे
म्य न-त ब्यय च्यत्थ् चय़ंगे कस् ।।८।।

पदवी विना मा त्राव् पादू
वादा पूरंख आद् छु वासा ।
ब्रकनु नाबद् ग्रकन् खासिय्
परम् पदय् परमानन्द् हांसिल् छुह् ।।९।।

रूपाय् ता यिह् आयिय् वरा
नरा निरालम्बा रूफ् ।
कृपा पर आनन्द जान वरा
अवतार रूम-रूम रूफ् ।।१०।

स मुद्र प्याल-त मदुर वासन्

---

१ 'आयिम्' ग. पाठ: । २ 'फवलुहम्' ग. 'फुलाह' च पाठ: । ३ 'पाद्' ग. पाठ: ।
४ 'वास्' क. पाठ: । ५ 'ग्रकनी' खासी, घ. ब्रकान् नाबाद् ग्रकनी खासी परम पद्'
ग पाठ: । ६ 'जान वारा' क ख. ग. पाठ: ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

अवय् क्या सन मंग तय्ं।
ज्ञान रूप-त शून्या आसन्
आसुन न-आसुन् सूतिय् छुह्।।११।।
यवय द्यान बक्चिश करे
तवय ज्ञान आदरे पान्।
यवय प्याल बस्मूय करे
तवय लय सुमारे स्मरे पान्।।१२।।
युस तौख् त्रावि-त मोख मिलावे
प्रयना प्रयम् लागे प्रार्।
वथरि ज्ञान-त पान् तलाडे
शून्यस शून्या सूत्य मिलावे।।१३।।
स्वर रत्रावि-त त्रहा ना मंगे
तीर् लायि-त्-त्रावे संग।

---

१ 'व्वज्' क. ख. ग. पाठः । २ 'यवा' 'तवा' इति च. 'यव' 'तव' क ख घ. पाठः। ३ 'भरिम् मै करे' घ. च. पाठः । ४ 'त्राविथ्' क. ख. ग. घ. ड. पाठः । ५ 'प्रैना प्रम लारे प्रार । मथूर्' क. ग. घ. 'प्राणिन्' ख. पाठः । ६ 'तलरे' क. पाठः । ७ 'स्वर त्रावित' क. ख. ग. पाठः । ८ 'तृह' ग. पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

शेरे गंग-त न्यथूय नावे
द्वह् पाथि-त अर्जुम् ब्रोंह् ॥१४॥
शून्याह् अशा आयाम् अथे
गंज् सुमारुम् तवय् सूत्य।
यव-सूत्य-जन् व्वपदावुम्
तिय् ठहरावुम् मनस-सूत्य॥१५॥
ग्वारिथ् समरिथ् शून्या खाडुम्
पारुद् मारूम् तवय्-सूत्यय्।
पंच़-अग्ना लाल चड़ावुम
ग्वाश प्रजा़लुम तवय-सूत्य॥१६॥
न क़रूम् रुत् न यछ जा़नुम्
जि़ रुतुय न-त रुतू किंह क़रुम नाव।
मूद् मुतुय दीह् संदारुम्

१ 'पाथ्योम्' ख. ड. पाठः । २ 'ब्रम्' क. ख. पाठः । ३ 'ज्ञान' क. ख. घ ड. पाठः । ४ स्वम्बरुम' क. खादि पाठः । ५ 'स्वम्बरिथ्' क. खादि पाठः । ६ 'तमिय सूतिय' ग पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

न-त॒ ज़ीवन्तु मारु माव् । ।१७ । ।
आगर्-फीरिथ् ताय् ग्रज़ोम
वुगवाज़ डूरुय सगांव॒ माव् ।
ओरय कृपा तिह् आलम् बरुम्
योड् किंह् न स्वरुमाव् । ।१८ । ।
प्रबा ती-ज़य व्वन्दि आदरुम्
रूम-रूम ज्योथ् तरूमाव ।
कृष्णा-रूपी ब्रह्मा स्वरिथ्
स्मरिथ् विष्णु महेश्वरा । ।१९ । ।
ग्वर-म्वखि ध्याना ध्यायिरे
चरणा हृदय कमल ।
तुल पवन् मूल शून्या
ऊर्ध्वमुखी गगन॒ मण्डल् । ।२० । ।

---

१ 'फेरथ् तय् ग्रजुम्' क. खादि पाठः । २ 'औरकि कृपा सूतिय्' ग. पाठः । ३ 'योर न किंह्' क. ध. ड. पाठः । ४ प्रबाते ज्वय्' ख. घ. पाठः । ५ 'तरूं' क. पाठः । ६ तुल् मूल पवन्' ग. 'मूल शून्याह्' ख. पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

नाना-रंग् शाख़ चतुर्वीद्
पानुय् मान् तह् नद् सग़वान् ।
नाना-प्रकार द्यानुक् थाना
ज्ञाना नामा अनीक दन् थाना ।
पूरक् मनय् स्मरे निराकार् ।।२१।।

सारिथ् गटु त्राविथ् ग्वाशस् चायस्
मारिथ् सारि इम् च्यानि पांछ़इन्द्रय् ।
तवय् सहज़कलि यूग् सादिथ्
सर्ववादि ज़ानिम् ज्ञान-पानस् ह्यहु ।।२२।।

दरनी प्रावूम्-त स्वरने प्ययस्
हरा व्वज़् चूय ब्‌र वुसरुम् ।
दिम् कोसुम् ज़रि ता आसुम् च्‌यि
आस् करूथम्-तय् खास् बरम् ।।२३।।

---

१ 'पान मान' च. 'मान' ग. घ. पाठः । २ 'स्मरे वानी' क. खादि पाठः । ३ 'ह्यहुय्' ग. पाठः । ४ 'हरा तिय् चय् बर् वमुम्' च. पाठः । ५ 'जरेत आसुय च्यय्' ग. पाठः । ६ 'बरूम्' क. पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

सहज़ सिपर पूरिथ द्रायस्

दितिनम जह्-पर शाही-त शाह् ।

हिश् छ्यस् सहजस् लांगिथ् बाहज़न्

ह्यति वाह-ज़न् तोतन्-त हार्य गिन्दिम ।।२४ ।।

पूरिथ् सहज़ सिपर-तय्

तुरगस् ज़ीना लगू रव् ।

पोशनूलन् तय वीना वज़े

करानी शंख-शब्द तय् ।

गंटा वायान् क्रियनद् बुज़े

दिवान् छ्यस् शंकरस् गडु ।।२५ ।।

हाल् मलि तय ज़ाल् वहारे

प्रान् लाडे मरे मीन् ।

रूग् गालि-तय यूग् संदारे

---

१ 'पैरिथ्' च. पारिथ्' क. ग. पाठ: । २ 'सह्ज़न् लागिथ् ब्ह्ज़न्' क. पाठ: । ३ 'ह्यतु' ग. पाठ: । ४ 'गिन्दुम् ग 'गिन्दुमस्' घ. पाठ: । ५ 'बाहन् घ. पाठ: । ६ 'लोर' क. ख. पाठ: ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

बूग आहारि करे शरीर। ।२६। ।

सूर् गौव् सु फ्वलि अंग् मेलने

अंग् सवारे बंग निवारे

यिह् न फले तिय वले

जन्त्र् तन्त्र् अनाहत् अनामय् अक्षय्। ।२७। ।

सावदान् खेले अंग् नचावान् रहे

अंग प्रज़लान् थ्यर वासन् दारान्।

अटल सावदान् वह् आप् भगवान्

ब्वह् शिव-गथ् तय चूह शिव पान्। ।२८। ।

वर् दियि-त ब्वह नेरय-वासा

भूमि पाद् गमे रसा रसा।

खसान्-तु शब्द शुनुम आहंग्

सारंग् राग वीना-त च्यंग्। ।२९। ।

युसुय् सहाय सुय पान् आसान्

---

१ 'वेय वासा' घ. पाठः । २ 'पाद गबॉ रसा' घ. पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

अथवासा शिव-र्ता शून्या कस्।
युसु व्यह् गाले त्यह् न्यवारे
सुह् शरीर थावे पानस् ब्रोंह्।।३०।।
पर् वहारे सार्था तारे
दुयी ब्वह् गाले आसे तस्
ज्ञानी दर्शन् दियि यख़लासे
तस् पान पानय् कल्पन् कासे।।३१।।
नाव् तारा वाव् सवारा
ना-रंग ना वर्न त् न गूथर्।
ब्रोंह अन् न्यन्दय् पत् करि वारय्
क-हन्दूय् दार-त कस् चारे।।३२।।
दियि अस्य-ति तारा त्रीय् औतारि
युसु गारान् सुह सूतिय् छुह।

१ 'पानय्' क ख. पाठः । २ 'अथ् वासनि' 'वासञ्' क. ख. ग. पाठः। ३ 'परवारि' क. ख. ग. पाठः। ४ 'साथ' ग पाठः। ५ 'वारथि घ पाठः। ६ 'कहन्दु दारि – त कस् दारे' क. ख. पाठः।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

ब्रोंह् ब्रोंह् पकि-त द्रह् मांव् लोसे
न्यथ्य् पोशि-तु सुय् छुय् साथ् ।।३३।।
यिथिस् वावस् थुरू मा खोरे
मुच़ रोज़ि तह् क्याह् छुस् जा़फ्।
च्यथ् बाज़िरिथ् जा़थ माव् सोरे
छिविथ-तु थुरिज़े कति क्या रूफ ।।३४।।
युस् मनि ह्यये द्यान-तु पानस् तोले
कुँह् न गेलि-त कैंसि न गेले।
जा़गि हरस्-तु लाग्यस बेले
पानय् पानस् सूत्य मेले।।३५।।
संतोश समाद् एक आसन् पर
मैं यूँ लगाया प्रयम का पथ्।
दृढ़ किया वालवाशी आँखियों का

---

१ 'सूत्य् छुय्' क. ख. पाठः। २ 'ख्यथ् बाजिरिथ्' क. ख.। 'क्षित्' म पाठः। ३ 'हिय्' पाठः। ४ 'एकासन्' घ. पाठः।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

ज्योती स्वरूपा क्या करूं मेरे से तेरे का।
सूक्ष्म् रूप दिखाया तुम्हारी आज्ञा से
तुम्हारे चरण हृदय में बसाया।।३६।।
अपने घर आया आप सॉंई
जो कुछ मैं था सो अब नाहीं।
यह बोध आया गुरू की बड़ाई
जिन गुरु ने दिया सत का तत्त्व बतांई।।३७।।
यव तूड़् चलिय् तिमय्/वल अंबर
यव ब्वछि चलिय् आसख् तृफ्थ्।
तिमय् आहार बुख्त् युक्त यूग कर्
रूग् गलिय् त आसख़ म्वख्त्।
तेलिय् निष्कल् तुष्टीय् विशेषा
खेल् मीलिथ् - तय आनन्द च्यनु।।३८।।

---

१ 'यवा' ग. घ. पाठः। २ 'यवा' ग. घ. पाठः। ३ 'त्यलि' ग. पाठः।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

बाग चायसि् बागे आयस्
परमा-सरस् नारस् त् नरस्।
शरने आयस् लल्लीश्वरस
श्री सत् ग्वरस् माधवा शिवस्।।
सीवादीवस् साकारस् निराकारस्
अन्तरकिस् सत्. सूय व्रतस्।।३९।।
अहम् पदव् सदा माधव्
शिव रव् हंसा अनुम्।
म्य-दावे प्याल बरिम भा मदु किय
म्य-दवि् हाल प्यवीम् सु-दाव।।४०।।
दीह आनन्द नद् मया
लूचन प्याला मुच़र।
साकय् पिलाओ हुह्-हा
ब्वह् ब्वहा हाहा मंतुवाला।।४१।।

---

१ 'अनिम्' ड. पाठः। २ 'बर्येम' ड. पाठः। ३ 'देहानन्द' क खादि पाठः।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

आगर् ग्रज़ि तय्र् नद् सा॑ज़ी
बान् बरिथ् ता॑य् फिरिथ् खा॑सि।
ख्यन् कमा-तय् व्पा नर
बॅरि बॅरि ता॑य् पीव् यख्लास्।।४२।।
आग॒र ग्रज़वूज़् अमृतूच्यं नदा।
रज़॑वूज़् प्रज़लान् सुदा-बूथ्।
तीलिथ्-त लदवूज त्रिन बवनन कदा
मीलिथ-त समुद्रंच पदवी ब्वय।।४३।।
होश् मेले-ता पोश् फ्वलानी
गोश् खिलानी साद॒-संग।
गंज् ज्ञानी अव-रूप द्यानी
कृपा च्याज़ी बहु-वा॑नी रंग।।४४।।
सुह् माह शमाह प्रज़लानी
तमाह्-ब्यन् ज़॑ला॑नी ब्वह्।

---

१ 'खासा' स्वर् अख् माता उपानर्' क. खादि पाठः। २ 'मेलि - त पोश फ्वल्लानी' ग. घ. पाठः। ३ 'खेलानी' क. ख. ग. पाठः।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

अव-रूप प्रयम छुय् मेलानी
यिमय् पद कैंसि मेलानी क्याह्।।४५।।
मथुरा पथ ब्रोंह् सत-रूप्
मेलुयौ सथ-गथ् त तत्त्व्।
तेलुयौ रोय-रगे हर्-रंग
मेलुयौ आत्म-संग-रव्।।४६।।
अवल करेयिम कहन् अट
लट् दिववनु हावुनम् द्यान्।
शमर्याम् देह् द्यव् अवय् वट
छ़ट् फेरवनु अवय् म्यानु पान्।।
तुष्टुभ् त कासूनम् नीत्रन् गट
ज़न् चाटस ग्वरी वख़नुम् ज्ञान्।।४७।।
युसुह ग्वर पिता सुय् छुह मोल्

१ प्रेम छु ख ग पाठ: । २ 'क' च. 'कै मलाने क्याह्य' क्याहय्' ख, ग पाठ: । ३ 'मतरूप' क. ख. ग पाठ: । ४ 'राग रगि' क ख. ग. पाठ: । ५ 'करेयिन्' ग. पाठ: । ६ 'हावुन्यम्' ग. पाठ । ७ 'कासुम्यम्' घ. पाठ: । ८ 'वख़नस्' वख़नम्' घ पाठ: । ९ 'छुम्' न. पाठ: ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

सुह इह प्रबल दीप प्रकाश।
सुह् इह् सर्व-क्लस् उदार् करवुन्
सुह इह ईश्वर् सुह छुहं ग्वर्।।४८।।
क्वह यिद दज़न् व्यह् ह्यियि बारे
ब्वय् ह्यियि हाहू अच्यस ग्रख्।
कूह त्रावे वुध्यस् स्वबावे
शहले चन्दन-दारे क्राय्।।४९।।
युस् ब्वह तां ब्ययि व्यचारे
इन्दय् मारे ज़न्-म्वंगर्।
स्यद्द तां सादू लगि अथि हुनरे
कैंसिए लंगु-त बारे क्याह।।।५०।।
द्राव् वुफे वाव-रूपी गुर्
ग्वर ईश्वर् आव् अविनाशी।

---

१ 'सुय् छय' २ कद् यद्' ग. 'युद्' ख. पाठः । ३ 'व्हा-त' ग पाठः । ४ 'इन्द्रय्' ग. पाठः । ५ 'कैंसि लबु - बारे क्याहय' क. ख. ग. 'क्याय्' च. पाठः । ६ 'रूपी' ग घ. च. पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

पान् मशे तॊ द्याना तोशे
स्वमन् परमानन्द् वांतु तथ्-राशी।।५१।।
सुह वा अन्दर न्यबर प्रथ् दीशन्
कंद्यव् दीशन् ग्वारान् लूस्तुय द्वह्
च्यथ् थव् मडिस अंदर छुय् निशान्
दुशन् वॊलिथ-त दितस छह।।५२।।
कैत्यन् कृपा करूथ् पान् स्नगान्
यिमन् मन् लगान् पानस सूत्य।
इह व्यूह त्रॄविथ सु देह-साधन्
वातिथ् वानस लाल रत्न् कथ् बानस् कुसु।।५३।।
नव् पाठ् ज़ानस तव पाठ् पड
नव् ज़प् जान सुह् माल् फिर्।
स मुद्रा हाव-तं च्यव मदुरु प्याला च्यम्
नद् नाल् रट् ब्वयिनय ज़य-रत्न्-माल।।५४।।

---

१ 'लूस् तुम् द्वह' ड़. पाठः। २ 'त' नास्ति क. खाहिषु 'दितस्' ग. पाठः। ३ 'करुथ्पान् स्नगन्' ख. घ. पाठः। ४ 'आव् सुदह सादान्' ग. घ. 'सादान्' क. ख. पाठः। ५ पाठ् पर' क. ख. पाठः।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

नव पाठ ज़ानस तव पाठ पड

सुह-पाठ् पानय् मने वातु।

ज़पान् आत्म त द्पान् वॉनी

पीव् मदु-रस् बांज़ि बरिथ्-तां छिव्।।५५।।

तिथु घाना ह्यत यिथु जानस अन्त

तिथु सहज़दि-त थिथु पानस म्य चूह-तु

तिथु ब्यय् चह् लाग्-त यिथु बहुत शंकर-बखूच्

यिथु पानस् मंचूरावनस् न कुँह्।।५६।।

इव्हय् कुंल् मूल त श्वाह् तुल्

यवा शाख पन-तॉ फूल्।

दात पप्यव् स मुद्रा पान

रसे सवाद त नन्यस् बोय्।।५७।।

---

१ 'पर' क ख. पाठः । २ 'पान मने वाचू' क. ग. 'पान मिनि वाचू' घ. पाठः । ३ 'बरि ताय्' क. घ. ड. पाठः । ४ 'न हिवु' क 'न ह्युद' ग पाठः । ५ 'शाह' क. खादि पाठः । ६ 'यव' क. ख. पाठः । ७ 'स्वाद' ग. पाठः । ८ 'नन्यसृ जाथ् ग पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

मन्द स-मुदुर् दोनु सानी
छ्,क् समाद् नाद-विन्द् चूट् ।
दान अखंड मिलायो मख़न
सादिकारिस द्रायाम् ग्यव् ।।५८।।
तव रूप यज्ञा हूमस करिथ्
आहुत दिचॅस् अंगन् हूँज़् ।
ज्योत् पर्ज़ानि कार्‌न च्याने
माने अतुर-त नन्यस् ब्वय् ।।५९।।
बान फुटरि-त पानय् थुरे
कुसु मरि-तॉ कस् लगि द्वख् ।
पानय् नहावे पानय् पूरे
कुसु सोरि-त कस् यियि टूख् ।।६०।।
प्रथ जिन्सस् अंशा थॅवुन्
अथ्य कैंसि-न चीतन् थॅवुन् ।

---

१ 'गेव्' ख ग. पाठः । २ 'जो तत्पर् जाने' क ख. पाठः । ३ 'कुस्' क. ख. ग. पाठः ।
४ 'कुसु मारि' क. खादि प ठः । ५ 'थाबुन्' क. ख. ग. पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

तति ज़न् अनुन्-त पूँछ़ा फीरिथ ताँ
न्यायुन् ब्यय् मिलावुन् गंजन् सूत्य्।।६१।।
यिवान् पान-त ज़्यवान् पान
रिवान् पान-त निवान् टूख्।
नाना प्रकार गिन्दान् पान
रिन्दान् पान-त ह्यवान् पत्थ्।।६२।।
प्ययान् स्वादस् त यिवान् नादस्
वादस् अथ चा़स छुन च्यारय्
पीवान प्याल्-त् छिवान् पान
ब्ववान पान-त चवान टख्।।६३।।
रंगिथ वय द्रायिस् संग-कुय्
म्वक्त म्वख्चू ज्ञान अकुय्।
ब्वय बख़चू-रूफ् गा़रान ना किंह

---

१ 'थावुन्' क. ख. ग. पाठः। २ 'न्याबुन- क. ख. न. पाठः। ३ 'रिन्दान्' क खादि पाठः। ४ 'च्याल् रस्' क. ख. पाठः।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

र्वय न कूँह ब्वय्-तॉ ना कूँह् ब्वह्।।६४।।

द्यान आसख् आस-त चूय्

ज्ञान ग्वाश-त ग्वाह् आसख् चूय।

विज्ञाना ला-शक मशख् चूय्

आसख चूय ता ब्वह ना कुँह्।।६५।।

मंडु युसु ज़ाले नारय्

दडु नौव इह संसारूय

दडु सु-ज़िियि न-ता मरे

रच़डु युसु गाले सारी आर्।।६६।।

सारी बूग्-आहारे निराहार्

न निन्द्रे आसि न हुसि आर

रहिथ् सोरे कर्म न्यथ् बेकार्

रुम-रुम् आयि अवतार।।६७।।

---

१ 'ग्वारान्' क ख ग पाठः। २ 'बुधि - त न कूँह बबु' क. ख. पाठः। ३ 'च़य्' क ख पाठः एवमंवाग्रेऽपि। ४ 'मरु युसु नार ज्वाले' क ख पाठः। ५ 'लागे' घ ड. पाठः। ६ 'सारि' क. ख. पाठः। ७ 'सारि' क. ख.

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

धानस्य म्य चह्-त् पानय् ब्वह् चूह
अथि् ज्ञानय् च्य म्य नमस्कार ।
पानय पान् पर्ज़ानि-त पानय् व्यचे
न-त अन् ज़ानय् व्यचिय् ज़ानिथ् कूँह । ।६८ । ।
छुह शाह-त गदा सुय-तते
पानय् दात ख़सान् पूरि रव ।
कुनि गौव् रय्पय् कुनि गौव बूरे
फल्-कुलिनूय मूरे रव् । ।६९ । ।
कुनि तमाहे कुनि तर्काबूरे
शमा युथ् होरे पूरे रव् ।
पव् पव् पलि तय् तस् ना मूरे
वांतित् वात्यस् पूरे रव् । ।७० । ।
कृपा-त कारुन् युस् पानय् ज़ाने
मनूय माने दिन्-तय् राथ

---

१ 'आव्' ग. ख. पाठः । २ 'न कूँह' च. ३ 'छुख्' क. ख. ग. घ. पाठः ।
४ 'निरय ग्य्' च. 'कुनि गव्' ग. घ. 'गौ' ङ. पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

सर्वरूप-द्याना युस् पर्ज़ानि
माने मनि-त नन्यस् ज़ाथ् ।।७१।।

युस रूप तारि-तदीफ् संदारे
नाथ सुह् नृप व्यचारे मन् ।
किंह मूदि-त किंह् बेमारे
कैंसि ज्ञान-खूरे तारे नाव् ।।७२।।

माता रूपी सु म्वदुर् दाम त पीव् ।
तय तपस्यायि मद म्वदुर पीव
दडा चेडे तथ् रूपी
रव्-रूपी त्रिबाविन् ।।७३।।

अन्दर त्रुंखि़-त न्यबर स्यदि
वुदिख् नाग् त ज़ागुख् तथि ।
किंह् बेमारि रस्तिय् मूदी

---

१ 'मनय् मारे' ग. पाठः । २ 'मकनि मानि' क. ख. ड. पाठः । ३ 'नाथ् युस् विचारे' क. ख. पाठः । ४ 'खूड्' पाठः । ५ 'समुद्रा' ड., पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

किंच़न विर्दु-नत रुदिय् तत्य्।।७४।।

ना नमुस् न कदाचित् नर्मनु

निथ् मनु यम्य सदा सर्वदा।

आकाशु-रूप् ज़गि-अन्तर् रमनु

तंथि नमुस् तथा सुह् नर्मनु।।७५।।

पद् ह्ययि-त पाद् छुह् मंगान्

अंगन् अंगन् श्रप्योम् रूफ्।

अंग्न्-कुड् यिथु रूफ् संदारे

अमृत दारे पीवान् दीह्।।७६।।

पान् सुह मानि त ब्ययन् सवारे

निश काठस् तारे च़न्दन् बोय्।

---

१ 'वुदुख्' क. ख. पाठः। २ 'ततिय्' ख. पाठः। ३ 'नित ममनो' ग. घ. ड.ए पाठः।
४ 'रूफ्' क. खादि पाठः। ५ 'छुम् आगान्' पाठः। ६ बिय् न स्वारे' ग. घ. पाठः।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

काठ् यिथ् बोय ह्ययि चन्दन-दारे
सहजूय् गारि त नन्यस् जाथ् ॥७७॥
दाथ् चालि-त क्याह् व्यचारे
पान मरे तय संदारे ब्यय
व्यह् गालि-त अमृत् तारे
तिथुयय् रूप च़य वर्यि क्याह् ॥७८॥
अर्पाविथ् ज़न्म चिदानन्द्
हंसद्वार रव्-रग् ता रूम् ।
कृपा ज्ञान कारून कर्म्
दर्म् सूत्य निरालम्बा रूफ् ॥७९॥
यति कुनि वुछ्यन् तति पानय्
सर्वद्यानूय् रटुमस् रूफ् ।
दीप प्रकाश तीज़ रव् पानय्

---

१ 'ग्वारि - त ग. घ. ङ. पाठः । २ 'गालि - त ख्या त विचारे' ग. घ. पाठः ।
३ 'रूफ' ख. ग. पाठः । ४ 'तति छुय् पानय' क. खादि पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

म्य ज़ान्यौव् सुह् ज़ि म्याने छुह्।।८०।।
ज्ञान आकाश् वांनी निर्वानी
मनि सहाय थान-थानय् छुह्।
आ राम ही राम् बोलो पवन्
ब्वेह् ब्वय-तां म्यानिय् छयुयह्।।८१।।
शये आसख् शये छुयस्
लये पान ब्वयिय् छुयस।
नीरिथ्-त गछान् तेलिथ्-त् यिवान्
मीलिथ् पान् तोत्य दयुय् छुस्।।८२।।
नादुय् बिन्द् पदुय परम
मदुय् मारि-फतुकुय् छुयस्।
विष्णु-ब्रह्मा महेश्वरा
कृष्णा् ब्यय् श्याम-सुन्दर छूस्।।८३।।

---

१ 'म्यानि छुइ' घ. छ. पाठः। २ 'आ रामे बालो पवान्' च. 'बोलो पान' ग पाठः।
३ 'दयिय् छुय्' क ग घ. पाठः।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

गोम औवतार सुह् महादीव्
सुह् वा सुह् वा सुयय् छ्युस् ।
पूरा तोले रामा बोले
ब्रह्म-स्वामी मन्दोरि छुस् ।
यिह् किंह् कॉछि तिह्-किंह् दिये
दुकान् त्रपित समुद्रुय् छस् ।।८४।।
दिशान्-त दीशन हैरान गयिस्
निशान् म्य-अनुमस् शुन्यालय् ।
छल लदु चर्कस-त कल् आयि मशान्
यिमन् शन् मांनि द्वशान् ब्वय् ।।८५।।
छु-न कुने छुह-ना कुने
वुछह् ओर् न योड् न कुने ।
दिय् फश तेले मूल न कुने

---

१ 'राम औवतार' ङ. पाठः । २ 'छ्यस्' ग पाठः । ३ 'अनुस्' ग. घ. 'अनुम्' ङ. पाठः । ४ 'लदुमय्' क. ख. पाठः । ५ 'सानी वुषार्' क. खादि पाठः । ६ 'वुछुम्' क. ख. ङ. पाठः । ७ 'तोले' क. खादि पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

छिवय् चीतन् त स्वरि-तोन् कुने।।८६।।

ओर-ति ज़ीवा योर-ति ज़ीवा

जीवस् जीवा रस् ख्यावान्।

युसु छ्युह् नाना-रंग रुर्वुनु

छुह प्रथ् कुने वातवंनु

च्यानु म्यानु ल्वानु बिंनु बिंनु तय

न-तु रानु सानुय् अकुय तय।।८७।।

न पृथ्वी न प्यठ्ठी न पातांली

न तली न पारी नापारी च्वपारी ज़्यथ्।

अन्तरा शुद्दम् सुशान्तम्

निर्मलम् सर्व तथ् दीवा दीव्।।८८।।

कौन् मरे-ता कौन् प्यतारे

समुद्रस सारे तारे थाह्।

---

१ 'ओडति ज़ावा योड-ति' क. ख. पाठः । २ 'रगरवनु' च. 'रंगारवनु' घ ड. पाठः। ३ ल्कानु बिनु न- त' ग. पाठः । ४ 'आय् ब्वय्' क खादि पाठः। ५ पारि च्वपारी' क. ख. ड. पाठः । ६ 'कूँह न मार-त कूँह्न' ड. च. पाठः।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

मदु-रस गंडु ता शशि औतारे
पानस् पान् पुशारे गाह्।।८९।।
ह्यमालय शूज़ू यवय् ल्युख पावुम्
तवय् पॉछ् स्मारुम् एका अन्त्।
न दाह् दिये ना केंछ् प्रावे
ठह्रावे न तु स्रिहनावे।।९०।।
कांक्षि पूरे अकांक्षित् वाने
पानय् दाता बुख़्ता आसे।
वार्सज़ि गाले ब्रॉंथ त्रावे
नाना-रंग सीर् नाथा बावे।।९१।।
माता पिता त ब्राता पानय्
प्रथ् थानय् न कथ् नये।
निराकार रूप लागिथ् पानय्

---

१ 'पानुय्' क. ,खादि पाठः । २ शुज वालिख् तवा पंछ् स्मारुम् एकान्त्' ग पाठ । ३ स्रिह नाविह' क ख च 'स्रिह न किंह ग. पाठः । ४ 'लागे' ग. 'गालि-त ब्रॉंथ' क. ख. पाठः । ५ 'मात पिता-त ब्रात पानै च. पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

सथ् पानय्-त कथ् सन नये । ।९२ । ।

कौन जाने तेरा स्वभाव

प्रभाव परमानन्दा जी ।

जो स्मरे हृदय में पावे

जैसी प्रभा भास्करा जी । ।९३ । ।

सारी तत्त्व् आहांरिम् गार चापुम

ब्रमवांवुम् अखंड मण्डल् ता पाताल् ।

हा-हू सूतिन् ग्यव् व्यगलावुम्

अंग नांवुम् विशेषा गंग् । ।९४ । ।

च्यथय लगिय्-तु पर्दुय पान ज़ान

च्यत्थय लगिय् पर्ज़ान् पान् ।

च्यत्थय लगिय ल्यठु छुय्य्-तु पर्ज़ान्

ल्यंठु ज़ान् म्यूंठु-त श्वद् ज़ान् पान् । ।९५ । ।

---

१ 'न कथ' क ख ग. पाठः । २ 'उपर्जान्' ग. पाठः । ३ 'द्वादश रव्' क. ख ग पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

वाव् रठ् द्वादशान्त रव् संगटे
मायाय तृष्णाय् मारे मन्।
ब्रॉथ त्राव् नाथ् छुय् पनने गरे
साथ् रठ् सूय-त ज्ञानदीह।।९६।।
बाव् ब्यन् ब्यन्-त नाव् छहस् केठान्
ऐठन् अंगन् अकुय् पय्।
लय् पवनस् म्वय छ्युय् बानस
मार्नुन्-त पानस् निश छुयय् दय्।।९७।।
मूर्थाह् करिथ्-त अमूरथ् पचीय्
खाख् छ्य-तॉय् क्याह् पचे।
पॅंछ महाबूत् करिन् फचे
ह्यंच् माया तय् करि-ना बुत्।।९८।।
मनि गालि त पानय् व्यचे

१ 'नाव छुम्' क. ख. पाठः २ 'करिनम्' क. ख. पाठः । ३ 'नाबूद् ख पाठः । ४ 'लागित' ख. ग. ड. 'ललित' क. पाठः । ५ 'ग्वारि-त घ. ड. पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

अहं गारि त क्याह् सन यछे
ब्ययन् ठडि डालि-त पानय् ऩचे
वाह्.वाह गुलि् फ्वलि्-ना तुल्-ना मूल्।।९९।।
गंडिथ-त डेंटोन् द्रायाय ब्वह् तस्
क्याह् लबांव् तस आसन जाय्।
न ब्वयि पाफ् तस् न पुज़ ख्वय् तस्
आसान् ब्वय् तस् न आसान्-जाय्।।१००।।
संबूर-एरू वातान् ब्वह् तस्
तंबूर-साज़य गॅू यस् ब्वय्।
शशि दारि लव दिमहा ब्वह् तस्
गंबूर-तोतस् क्याह् बोल्याह्।।१०१।।
अनेक नंजू मेज्याम् दर्याव्
अवय् स्वबाव आव् स्वरूफ्।

---

१ 'दण्डु' पाठः। २ 'ब्यूर' ड. पाठः। ३ 'दि महाबूतस्' क. ख. 'दिमा' च. पाठः। ४ 'न' क खादि पाठः।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

ना किंह थव-त ना किंह त्राव
बहु दीप आव नह छिपा रूफ् । ।१०२ । ।
आकाश सुह मदुर वछूम दार
तवय-तार रटुमस् पव ।
दीपा शशि-रव् रूप औतारे
बहु-आकार न-त् निराकार । ।१०३ । ।
युस्-सा कन्दि बस्मा करे
पसमंद् तिहन्दु शून्या-रूफ् ।
शास्तर् शस्तर क्याह मूचरे
लुहार-अग्न् सुह मार्यस दीह् ।
किंह-न सुह मंगे क्याह न स्मरे
धान् सुह वरे बिय-त पान् । ।१०४ । ।
अनाहन् शब्द मना गंडिथ्
पान मंडिथ् रिशीयस ।

१ 'युस् मा' क ख. ग. घ. पाठः । २ 'अग्न् समारिस्' ग. पाठः । ३ 'किंह न सरे' ग. पाठः । ४ 'अनुपन् मन्' क. खादि पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

हाकै बान बरिथ-त पान्
साकै वाकय् आसि दानिस्त् ।।१०५।।
दूर चल तह् हुरुय् कॉछयह्
पूरे ख़सि हुयम आयित
सुय शन आयीन क्वरूनय
न शीतल् शीतल् माह् ब्वख् ।।१०६।।
दर्याव् - अन्दर अंशाह् आव्
ज़ाव् म्यच्य्-त ज़ायिस् म्यचू।
म्यच्यय् बूग-त न्यामचू ख्याव्
म्यचिय् करुस् पारिज़ान्
अवय् म्यचि वज्योव् म्यह चूह्
पतोह् श्रपिथ् म्यचिय् गव् ।।१०७।।
आयाव् वर् ह्यथ् यति स्वर् रहुस्-ता
समुरुन् म्यचे पाजु त वाव।

---

१ 'रहुस् न स्मरिन्' ग. पाठः। २ 'वथदज त' ख. पाठ :।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

अग्न् आव्-त वाह वाह रंग् प्यव्
नचान् त्रचान् सपुनुम् नाव् ।
आज्ञा आयि-त चलु हा चूर्-ज़न्
वाव् आसु व्वदन्यत् क्यथ सन प्यव् ।।१०८।।
रहे निशाना ईश्वर-रुन्दु नावा
कति आयाव्-त कतु-सन गव् ।
समरिथ्-त सादिथ् तमि कज़ाव्
दीव ह्यत मुख़ी त सीव् करहास् ।।१०९।।
छुननस् लूब क्रद काम् मूह मद् अहंकार
चाव् संसारस् त अमल् कर्यस् ।
पतोह आमाल् अमल् होरने गाव्
प्वंछ़ आयाव-त क्कछ़ क्या नियं ।।११०।।
ईश्वरि वाद् ह्यथ् च्वत् कज़ाव्

१ 'वथदज्-त' ख. पाठः । २ 'काम क्रेद लोब' क खादि पाठः । ३ 'त' क खादिषु नास्ति । ४ 'ईश्वरी' च. पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

यति आवं-त आंसु मनुष्या रूफ् ।
युसुह् देव स्वरि मनस त बाब प्रथ जुवस्
तिम् जूह् सीव् कस् कालि अथे आय् । ।१११ । ।
तिमय् छिय् मनुष्य न-त किंह् द्राय गुपन
यिमन् आदन् सुह् पान् मशिथ् गव् ।
प्ययख् बुडिथ् चीतन् सु दन सोर्यख्
छयत्रि बान कति मालि दरकार् यिये । ।११२ । ।
सहज त आनन्द् रह हा दारिथ्
पानय् पान् संदारिथ् क्यथ् ।
कृपाय् च्याज़े गछ़ हा तरथि्
ईश्वर रूफ् स्वरिथ् तह क्यथ् । ।११३ । ।
सहज़ त ज्ञान ज्यम् परमानन्द्
अव रूप सानन्द् आसिय् कोई ।

---

१ 'सरि' ख. ग. पाठ : । २ 'छयन्' क. ख. पाठः । ३ 'यिय्' घ. पाठः । ४ 'किथ्' ग. घ. पाठः । ५ 'सहज' न' ग. पाठः । ६ 'सारिथ्' क. ख. पाठः । ७ 'आसेख् तये' ग. पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

आत्मा रज्य़य् वाचू मा स नद्
मदु सा सुह नद् वहं वञी ।।११४।।

ओं श्रीगुरवे नमः ।

बू यो न बीजम् तोया न तीज़म्
वायु नाकाशम् अवा ताह सर्वम् ।
न ज़ि ब्रह्माणडम् नच़ खात्म-आत्मम्
शक्ति स्वरूपम परं ब्रह्म सोहम् ।।१।।
पुरुषो त पुरुषात् विमर्शो न मर्शात्
वर्ना-तीज़ो शान्त अन्तर् आकाशम् ।
सूक्ष्मो न विस्तार् न परं व्यापारम्
न अन्तदारम् परं ब्रह्म सोहम् ।।२।।
थावर् न ज़ंगम् नह् च़तुर्वर्णम्
ज़ग् न च़राच़र् तथ् परमामारम् ।
सथ् ना असतु अछिन्नदारम्

१ 'मदुरसा' क. खादि पाठः । २ 'अवता' क. ख. पाठः । ३ 'पुरुषाथात्' क खादि पाठः । ४ 'सन्नसतोच्छिन्न' ग. घ. पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

सूक्ष्मो समादि परं ब्रह्म सोहम् । ।३ । ।
जागो जुर्गान्तर् सन्यास-वर्णम्
तुरीया-अतीता तथ प्रसिन्दोहम् ।
अचिन्त्यरूपं परमाकारम्
थ्यर केवलोऽहम् परं ब्रह्म सोहम् । ।४ । ।
माता न पिता ब्राता न बन्दु
वार्ता स वेदम् एको केवलोहम् ।
ग्वरू न चेला मन्त्रो न लीला
तथ युस् अकेला परं ब्रह्म सोहम् । ।५ । ।
मोहो न ब्वदि नच वैराग्यम्
नच़ राग-दोषम् निर्वैरशान्तिः ।
स्वप्न् न जाग्रथ् तथ् शुद्दबोदम्
सूक्ष्मो स्वयम्बू परं ब्रह्म सोहम् । ।६ । ।
पाद़् न बीजम् चतुर्बुजाकारम्

---

१ 'जोगन्तर्' ग घ च पाठः । २ 'प्रसिद्धोछम्' क, खादि पाठः । ३ 'द्वषम्' ड. पाठः । ४ 'बीजन' ग घ च पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

न त्रि-ज़ग् चराचर् अनन्तरूपम् ।
सहस्रनामम् निरादारम्
शुद्द-स्वरूपम् परं ब्रह्म सोहम् । ।७ । ।
स्यदू न स्यजू विद्या न गति
रिद् न परीक्षा आकाश-रूपम् ।
खगाकाश् उल्लंगिथ् नच़ राज़योगम
न लम्ब् न निरालंब़ परं ब्रह्म सोहम् । ।८ । ।
रूपं न रस् न स्पर्श् गन्द् न देहो
दुयी दयस् न छुस् केवलोहम् ।
जी़वो जीवता न वर्ता न वार्ता
कर्ता सहोकार् परं ब्रह्म सोहम् । ।९ । ।
इडा न पिंगला नच़ ब्रह्मनाडी
स्वयिय् सुषुम्ना पा़याहमेव ।

---

१ 'खाकाश' क खादि पाठः । २ 'दपिस्' ख. ग. 'छुयस्' ख पाठः । ३ -सहि' घ. 'स हि सुषुप्ता' 'सा हि ' ग पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

अनाहत् अनामय तुरायाऽवस्था
आनन्दरूपंद परं ब्रह्म सोहम्।।१०।।

इति स्वानुभवोल्लासदशकम्।

तथ् अन्तर दृष्टि संबांवुम्
यिह् म्य त्रावुम् तिह् आंवुम् नये।
लल्ल् माधव शिव् ईर्कांवुम्
ब्येकांवुम् दीह् म्य पानये।
च्यत्थ अन्तर मन्ज़लि सावुम्
ललावुम-त म्य बांवुम् नये।
पूर-विचार् प्रागित् आवुम्!
यिह म्य त्रावुम तिह आवुम नये।।२।।
यमि तराज़ि दीह् संबावुम्
मावु आवुम् सुय् पानये।

---

१ 'दृष्ट' क. खादि पाठः। २ 'प्रगितु' च. पाठः। ३ 'सिर रादुम्' घ. ङ. 'मि रावुम्' ख. पाठः।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

मन सथ-असथ् सिरावुम्
लॉनु त्रावुम्-त कुस्[1] म्वल् दियेे।
व्वज़् म्यॉनु सारुय तवय् छुस् सॉवुय्
यिह् म्य त्रॉवुम् तिह् ऑवुम्-नये।।३।।
दीह-अन्तर सुषुप्त् सॉवुम्
जॉगॉवुम् तुरीया आये।
अनाहत् आनन्द खिलॉवुम्
मिलॉवुम् अनामय् च्ययेे।
तद्-रूप म्य-पान ललॉवुम्
ब्वह् छयस् सावु-त किंह् रावुम्-नये।।४।।
कलि-कलि मिलवावुम्[2]
ललावुव् रूफ् पानये।
तव अन्तर् दीह नावुम्
पीवावुम् रस् पानये।

१ 'कुसु' क. पाठ: । २ 'मिलनावुम् लल्लि हावुम्' क. ख. ग. पाठ: ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

तव तुष्टि निदाना प्रांवुम्
ब्वह छ्यस् सांवु-त किंह् राहुम्-नये।।५।।
ब्वद् ख्ययम् च्यंयम् प्रख्टेयम्।
च्योम् वैराग्य अक्षय् दाम्।
द्वन् गूच़र व्यचा़र् सांवुम्
निनावु रिशियस् तवय्।
आदि श्रुथ आचारांवुम्
ब्वह् छुयस सावु किंह् रावुम्-नये।।६।।
न खूच़स् न कूँह् लज्जुम्
व्वपजु तिय् पानय् आंनुम्।
न म्य करु-त न सांपनु
रंजु सहज़ हीत् अवय्।
रीच़-तीच़-त प्रीच़ निर्बावुम्
ब्वह् छ्यस् सांवु-त किंह् राहुम् नये।।७।।

१ 'किंछ् न' ग. पाठः । २ 'निनावु रीशस्' घ पाठः । ३ 'आचार आवुम्' क. खादि पाठः । ४ 'नहिं' च. पाठः । ५ 'लज्जुस्' च. पाठः । ६ 'आब्' क. खादि पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

तत्त्व प्रसंदिथ् दय् प्रावुम्
अंग गॉलिथ् ज़ग् मा म्बये
ना ख़ोच नाल्वन् करि-ज़े
प्रज़ि न्यर्मल् श्वद्द शिवय् ।।
दिन् प्रलय् तक् एकावुम्
ब्वह् छ्यस् सावु किंह् रावुम् नये ।।८।।
ऐकतु परमबूद् सदानन्द
तसि विदीह समाद् यस स्वर् आसे ।
रिदू स्यजू विद्या यस आदरु असि ।
तत्पदवी रसे बिय् क्याह् आसे ।।९।।
रिद्द-स्यद्द-विद्या ग्रज़ि आगरय्
तसि गरय् व्यबव् सागरय् ग्वाह् ।
करि सूर्य उदय् च़लि गटकारूय्

---

१ 'तत् प्रसन्नो उदय्' ग 'उदय' क. ख. 'प्रसन्दि उदय' च.पाठः । २ ' लागिथ्' घ. पाठः । ३ 'ज़यमा मयी' च. पाठः । ४ 'न खेचिव लोकाव् ग. पाठः । ५ 'तथ्' क. खादि पाठः । ६ 'तय' च. पाठः ।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

सहज़ विच़ार तथ् सारबूद्॥१०॥

व्रत् सथ् तत्त्वबूद् श्वद्दि आचारा
इय व्यवहारा वीद-र्ता यूग्।
च़ह् कुस् ब्वह् कुस् कूँह् व्वच़ारा
अछिन्न-दारा सुय् चे़न् रूफ्॥११॥

यिह् रूफ् सुह् रूफ् पर-रूफ् वले
आव कले निरंज़ना रूफ्।
यिह शूब लूबस जा़न्-वेगवले
अज़रामर् आसे श्वद्द-दीह॥१२॥

ओं तत्सत्॥ आदितः श्लोकाः १४६॥

इति श्रीशारिकादेव्यवताररूपायाः श्रीमाधवदरस्यात्मजायास्तपस्विन्या रूप्यभवान्या रहस्योपदेशः समाप्तः।

---

१ 'शुद्दि' च. पाठः। २ 'लूब म जान्' क. खादि पाठः।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

वासकूरा का अस्थापन

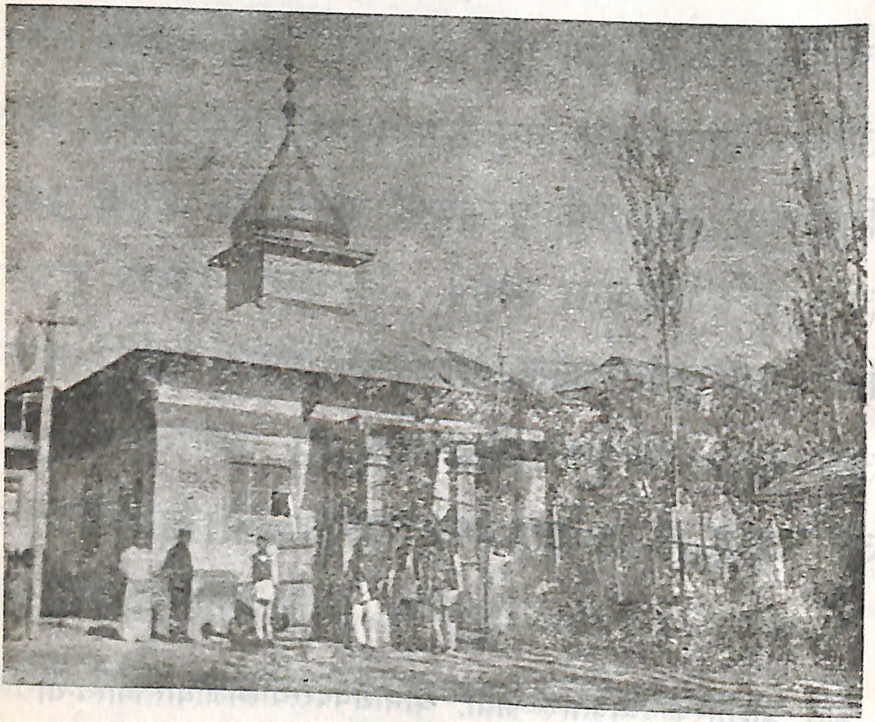

जहाँ देवी रूपभवानी का पितृपक्ष का श्राद्ध मनाया जाता है।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

घासकूरा का चमत्कार

देवी रूपभवानी ने अपने अनपढ़ भतीजे बालजू दर से कहा 'लिखो', और वह एक बहुपठित व्यक्ति के समान अनायास लिखने लगा।

चश्मा-साहिबी का अस्थापन (वस्तरवन)

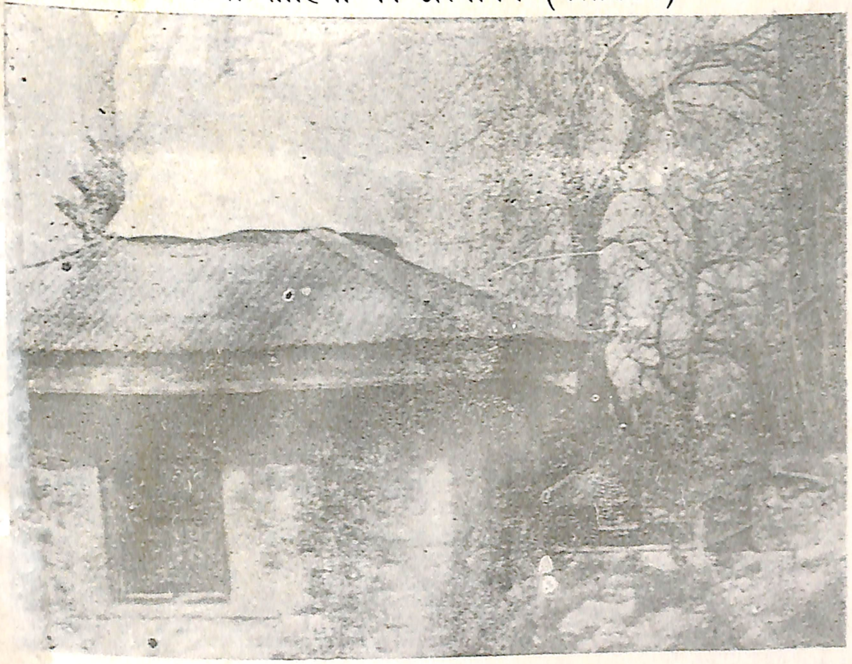

[illegible] है। यह स्थान परी-महल की पहाड़ियों पर (राजभवन के निकट) चश्माशाही के पास हैं।

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri

आरती

श्री रूपा भवानी, अलखेश्वरी साहिबा

ओं जय जय रूपा भवानी ।।
शक्ति स्वरूपा, मुक्ति प्रदाता,
अम्बा जगत की तुम हो माता ।
भक्तिभाव से तुझ को ध्यावे,
धन्य है माँ वह प्राणी।। ओं जय०।।
ज्ञान की तुम हो अक्षेय भंडार,
तेरी शरण जो नैया उसे पार।
निज आनन्द में इत उत चमके,
जिस ने गत पहचानी ।। ओं जय०।।
अलख तुम्हारे नाम अलक्ष है,
साहिब तेरे काम अलख्य है।
तेरे मुख से अमृत वर्षा
तेरी अनमोल वाणी।।ओं जय०।।
डूबे इस अन्धकार में माता,
कलयुग के व्यवहार में माता ।
तेरा ही प्रकाश प्रदर्शन,
पथ का करले रानी ।। ओं जय०।।
धर्म अर्थ, काम, मोक्ष धारा,
कल मल हरनी रूप है न्यारा ।
जल में है वह कमल समान,
जिसने बात यह जानी।। ओं जय०।।
कष्ट निवारो माता सारे,
नील गगन में चमकें तारे।
सतम निशा में ज्येष्ठ पुनि को,
चमकी चन्दा रानी ।। ओं जय०।।
'प्रेमी' भगत है तेरे द्वारे,
शरन तिहारी कर जोड़ सारे।
मनो कामना पूरी करलो दुनिया आनी जानी।
ओं जय जय रूपा भवानी।।

श्रीनगर २०-१-१९७९

सर्वानन्द कोल, 'प्रेमी' सौफ, कुकरनाग (काश्मीर)

CC-0 Shri Alakh Sahiba Trust (Regd), Tirath Nagar, Talab Tillo, Jammu -180002. Digitized by eGangotri